This question paper contains **4+2** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **704**

Unique Paper Code : **205641** **D**

Name of the Paper : **Hindi Language-C**

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi-C**

Semester : **VI**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

1. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) निम्नलिखित चार काव्यांशों में से किसी **एक** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 8+8+8=24

(*i*) कल्पों की चिंता और
चिंतन और स्नेह श्रम
ऐसे विचार-मूढ़
निमिषों से हारे !

सरल है अशिव का वत्स!
कर देगा संचरण
शिव का प्रसार
अभय आरती ही माँगता है;

नाश की लहर तो
एक झोंका, और फैलती हैं,
संकल्प किन्तु निर्मित का
निकल एक मुँह से अखिल-भारती ही माँगता है।

P.T.O.

(*ii*) ऋषि ने

जिसे उपनिषद् के

निशिता दुरत्या दुर्गम पथ'

कहा है वत्स !

भारत का प्राण सदा

वही पथ ढूँढ़ते

गाँव-नगर वन-पर्वत

निर्जन में बहा है वत्स !

(*iii*) उतर नशा उसका जाता,

आती है संध्या बाला,

बड़ी पुरानी, बड़ी नशीली

नित्य ढला जाती हाला;

जीवन के संताप, शोक सब

इसको पीकर मिट जाते;

सुरा-सुप्त होते मद-लोभी,

जाग्रत रहती मधुशाला।

(*iv*) साकी बन आती है प्रात:

जब अरुणा उषा-बाला,

तारक-मणि-मंडित चादर दे

मोल धरा लेती हाला,

अगणित कर किरणों से जिसको

पी, खग पागल हो गाते;

प्रति प्रभात में पूर्ण प्रकृति में

मुखरित होती मधुशाला।

(ख) निम्नलिखित गद्यांशों की व्याख्या कीजिए :

(*i*) युद्ध सर्वग्रासी होते हैं। (दीर्घ नि:श्वास) न जाने कितने निरपराध व्यक्तियों को व्यर्थ ही अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता है। न जाने कितने व्यक्ति सत्ता की इस सर्वभक्षी भूख के कारण अनाथ और अपाहिज हो बैठते हैं। इन्हीं युद्धों के कारण जो नारी बिना अपराध के दंड भोगती है उसका इतिहास क्या कभी लिखा जा सकेगा ?

अथवा

मैं किसी का दास नहीं हो सकता। पिता ने मुझे और भैया दोनों को एक समान राजा बनाया था उन्होंने जो धरती मुझे दी थी, वह मेरी प्राणवल्लभा है। और अपनी प्राणवल्लभा को, अपनी राज-लक्ष्मी को, कोई किसी को स्वेच्छा से कैसे सौंप सकता है ?

(*ii*) मैं तो उन ब्रह्मचारियों में नहीं हूँ। पुष्टिकारक और स्वादिष्ट भोजन को मैं मन और बुद्धि के लिए आवश्यक समझता हूँ ! दुर्बल शरीर में स्वस्थ मन नहीं रह सकता ! तारीफ़ जानदार घोड़े पर सवार होने में है। उसे इच्छानुसार दौड़ा सकते हो। मरियल घोड़े पर सवार होकर अगर तुम गिरने से बच ही गए तो क्या बड़ा काम किया ?

अथवा

वह बातें, जो हृदय को मलते रहने पर उसके मुख से न निकलने पाती थीं; कर्तव्य और शंका जिन्हें अंदर ही दबा देती थी—आंसू बनकर निकल जाती थीं। चंदे वाले जलसे में जाना इतना घोर अपराध था कि क्षमा ही न किया जा सके ? वह जहाँ जाते हैं, जो करते हैं, क्या उससे

पूछकर करते हैं ? इसमें संदेह नहीं कि विद्या, बुद्धि और उम्र में उससे बढ़े हुए हैं, इसलिए वह अधिक स्वतंत्र है, उन्हें इस पर निगरानी रखने का हक़ है वह अगर उसे कोई अनुचित बात करते देखें, तो रोक सकते हैं।

2. ''कालजयी' के नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिए। 15

अथवा

कालजयी के पात्र 'अशोक' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'मधुशाला' में वर्णित जीवन-दर्शन पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'मधुशाला' के कला-पक्ष का विश्लेषण कीजिए।

3. 'प्रेमा' का चरित्र-चित्रण कीजिए। 15

अथवा

'प्रतिज्ञा' की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

4. 'सत्ता के आर-पार' नाटक में वर्णित द्वंद्व का विश्लेषण कीजिए। 15

अथवा

'अहंकार से मुक्त होकर ही तप पूर्ण होता है और तप के चरणों में झुककर ही सत्ता पवित्र होती है।'' कथन के आधार पर 'सत्ता के आर-पार नाटक' की विवेचना कीजिए।

5. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : 6

(क) 'कालजयी' की भाषा-शैली।

(ख) 'प्रतिज्ञा' का भाषा विश्लेषण।